

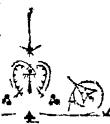
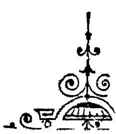

॥ श्रीः ॥

विनयवर्णमाल ।

भक्ति-रस का एक सरल काव्य ।

जिसको
श्री काशी शिवपूरा ग्राम निवासी
जगदेवदास ने
वर्णों के क्रम से प्रत्येक वर्ण को आदि मे रख
ईश्वराराधन पाठ भक्तजनो के विनोदार्थ
कुण्डलिया रचा ।

दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा
'लहरी प्रेस' काशी मे
मुद्रित और प्रकाशित ।


१९२२ ई०